National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(62): 179-181
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ० प्रीति सिरौटीय
सहा० आचार्य, संस्कृत विभाग,
नेहरू महाविद्यालय, ललितपुर,
उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence:
डॉ० प्रीति सिरौटीय
सहा० आचार्य, संस्कृत विभाग,
नेहरू महाविद्यालय, ललितपुर,
उत्तर प्रदेश, भारत

अद्वैत वेदान्त में मोक्ष की अवधारणा - एक शास्त्रीय एवं दार्शनिक अध्ययन

डॉ० प्रीति सिरौटीय

सार (Abstract)

भारतीय दर्शन की परम्परा में मोक्ष को मानव-जीवन का परम पुरुषार्थ स्वीकार किया गया है। अद्वैत वेदान्त, उपनिषदों, भगवद्गीता तथा ब्रह्मसूत्र की शाङ्कर परम्परा पर आलम्बित, मोक्ष को आत्मा और ब्रह्म की ऐक्य-अनुभूति के रूप में व्याख्यायित करता है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य अद्वैत वेदान्त में मोक्ष की अवधारणा का विस्तृत, शास्त्रीय तथा दार्शनिक पक्ष प्रस्तुत करना है। इसमें मोक्ष की दार्शनिक पृष्ठभूमि, बन्धन के कारण, अविद्या एवं माया का सिद्धान्त, ज्ञान और साधन-चतुष्टय की भूमिका, जीवन्मुक्ति एवं विदेहमुक्ति की संकल्पना, तथा अन्य वेदान्त दर्शनों से तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। साथ ही आधुनिक विद्वानों की व्याख्याओं के आलोक में अद्वैत वेदान्तीय मोक्ष-सिद्धान्त की समकालीन प्रासंगिकता पर भी विचार किया गया है। यह शोध-पत्र उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र, भगवद्गीता तथा आदिगुरु शंकराचार्य के भाष्यों को प्राथमिक स्रोत बनाते हुए तैयार किया गया है।

बीज-शब्द (Keywords)- अद्वैत वेदान्त, मोक्ष, ब्रह्मज्ञान, अविद्या, जीवन्मुक्ति, विदेहमुक्ति

भूमिका

भारतीय दार्शनिक परम्परा का मूल उद्देश्य मात्र तत्त्वचिन्तन भर नहीं, अपितु मानव-जीवन के दुःखमय बन्धन से मुक्ति प्रदान करना रहा है। वैदिक युग से लेकर उपनिषद्काल तक चिन्तन की दिशा कर्मकाण्ड से ज्ञानकाण्ड की ओर अग्रसर होती हुई दिखाई पड़ती है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष- इन चार पुरुषार्थों में मोक्ष को परम पुरुषार्थ कहा गया है, क्योंकि वही अन्य तीनों का अन्तिम लक्ष्य है। उपनिषदों में बार-बार यह उद्घोष किया गया है कि संसार दुःखमय है और इसका कारण अज्ञान है। इस अज्ञान के नाश से ही आत्मा अपने वास्तविक स्वरूप को पहचान सकती है। अद्वैत वेदान्त इसी उपनिषद्-दर्शन परम्परा का सर्वाधिक सुसंगठित, दार्शनिक और विकासित पक्ष है। आदिगुरु शंकराचार्य ने अपने भाष्यों में यह स्पष्टतः प्रतिपादित किया कि जीव और ब्रह्म में किसी भी प्रकार का कोई वास्तविक भेद नहीं है, भेद का अनुभव मात्र अविद्या के कारण होता है।

अद्वैत वेदान्त: दार्शनिक पृष्ठभूमि

अद्वैत वेदान्त का मूल आधार उपनिषद् हैं। 'अद्वैत' का तात्पर्य है- द्वैत का अभाव। उपनिषद् ब्रह्म को एकमेव अद्वितीय तत्त्व के रूप में प्रतिपादित करते हैं- **"एकमेवाद्वितीयम्"**[1]।

शंकराचार्य के अनुसार ब्रह्म ही एकमात्र पारमार्थिक सत्ता है। जगत् व्यवहारिक स्तर पर सत्य प्रतीत होता है, परन्तु पारमार्थिक दृष्टि से मिथ्या है। जीव ब्रह्म से अभिन्न है, परन्तु अविद्या के कारण वह स्वयं को सीमित मानता है। अद्वैत वेदान्त के तीन स्तर माने गए हैं -

1. पारमार्थिक सत्ता (ब्रह्म) 2. व्यवहारिक सत्ता (जगत) 3. प्रातिभासिक सत्ता (भ्रम)

मोक्ष की अवधारणा को समझने के लिए इन तीनों सत्यों का ज्ञान आवश्यक है।

मोक्ष की सामान्य भारतीय अवधारणा

भारतीय दर्शन परम्परा के सभी दर्शनों में मोक्ष को किसी न किसी रूप में स्वीकार किया गया है, परन्तु उसकी व्याख्या भिन्न-भिन्न प्रस्तुत की है। न्याय-दर्शन में मोक्ष को दुःखों के अत्यन्त अभाव के रूप में स्वीकार किया गया है- '**अपवर्गोऽनन्तदुःखक्षयः**'।[2] सांख्य और योग दर्शन में पुरुष और प्रकृति के विवेक से उत्पन्न कैवल्य को मोक्ष कहा गया है- **"पुरूष-प्रकृति-भेद-ज्ञानं कैवल्यम्"**[3] बौद्ध दर्शन में निर्वाण को तृष्णा-निरोध की अवस्था माना गया है- **'निंउपधिषेष-निर्वाण'**।[4] परन्तु अद्वैत वेदान्त इन सभी से भिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। उसके लिए यहाँ मोक्ष कोई नवीन अवस्था नहीं, अपितु नित्य सिद्ध आत्मस्वरूप की अनुभूति है।

अद्वैत वेदान्त में बन्धन का कारण- अविद्या और अध्यासन सिद्धान्त

अद्वैत वेदान्त के अनुसार बन्धन का मूल कारण अविद्या है। आदिगुरु शंकराचार्य ने इसे 'अध्यास' के रूप में भी व्याख्यायित किया है। अध्यासन का अर्थ है- एक वस्तु के गुणों का दूसरी वस्तु में आरोप- **"आत्मानमानात्मानोः मिथ्या सम्बन्धः अध्यासः"**।[5]

आत्मा के शुद्ध, नित्य, चेतन स्वरूप का देह, मन और इन्द्रियों पर आरोप हो जाना ही संसार-बन्धन का कारण है। आदिगुरु शंकराचार्य ब्रह्मसूत्र-भाष्य की भूमिका में कहते हैं- **"स्मृतिरूपः परत्र पूर्वदृष्टावभासः"**।[6] अविद्या अनादि है, परन्तु अनन्त नहीं। ज्ञान से उसका नाश सम्भव है।

माया का सिद्धान्त और मोक्ष

अद्वैत वेदान्त में माया को ब्रह्म की शक्ति के रूप में स्वीकार किया गया है। माया ही नाम-रूपात्मक जगत् की उत्पत्ति का कारण है। माया न तो पूर्णतः सत्य है और न ही असत्य, वह अनिर्वचनीय है- 'सदसदनिर्वचनीय'। मोक्ष की प्राप्ति माया के अतिक्रमण से होती है। जब साधक ब्रह्मज्ञान प्राप्त करता है, तब माया का प्रभाव समाप्त हो जाता है।

मोक्ष का स्वरूप- नकारात्मक और सकारात्मक विवेचन

नकारात्मक दृष्टि से मोक्ष का अर्थ है- अविद्या, अज्ञान, दुःख और बन्धन का पूर्ण अभाव- **'विद्या-अविद्या-दुःख-बन्धन-विनाशः मोक्षः'**।[7] सकारात्मक दृष्टि से मोक्ष आत्मा के सच्चिदानन्द स्वरूप की अनुभूति है- '**आत्मनः सच्चिदानन्दस्वरूपस्य अनुभूतिः**'। उपनिषद् घोषणा करते हैं- **"ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति"**[8]

ज्ञान, कर्म और भक्ति का स्थान

अद्वैत वेदान्त में मोक्ष का प्रत्यक्ष साधन आत्म बोध ही है, जो ज्ञान के अन्य साधनों से श्रेष्ठ बताया गया है- **'आत्बोधोऽन्यसाधनेभ्यो हि साक्षान्मोक्षैकसाधनम्'**।[9] कर्म और भक्ति को चित्तशुद्धि के लिए आवश्यक माना गया है। भगवद्गीता में कर्मयोग और भक्तियोग का जो महत्व बताया गया है, उसे आदिगुरू शंकराचार्य ज्ञानयोग की प्रारम्भिक अवस्था के रूप में स्वीकार करते हैं।

साधन-चतुष्टय और ब्रह्मज्ञान

साधन-चतुष्टय- विवेक, वैराग्य, शमादि षट्सम्पत्ति और मुमुक्षुत्व- मोक्ष-प्राप्ति के लिए अनिवार्य हैं। सत्यासत्य के भेद का ज्ञान हो, संसार के प्रति अनासक्ति का भाव हो, षट्कसम्पत्ति (शम, दम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा, समाधान) हो परन्तु यदि मोक्ष की इच्छा ही न हो। साधक में मोक्ष के प्रति विरक्ति हो तो भी तत्त्वज्ञान सम्भव नहीं है अतः ब्रह्मज्ञान प्राप्ति के लिए मुमुक्षत्व भी परम आवश्यक है।

जीवन्मुक्ति का सिद्धान्त

अद्वैत वेदान्त की एक विशिष्ट देन जीवन्मुक्ति की अवधारणा है। जीवन्मुक्त वह है, जिसने देह रहते हुए भी ब्रह्मज्ञान प्राप्त कर लिया है। वह संसार में रहते हुए भी उससे असंग रहता है

'ब्रह्ममैवाहमिति ज्ञात्वा कौतूहलविवर्जितः।

जीवन्मुक्तः स विज्ञेयो यस्य देहाद्यहमतिः।।'[10]

विदेहमुक्ति

प्रारब्ध कर्म के क्षय के पश्चात् जीवन्मुक्त की देह समाप्त होती है और विदेहमुक्ति प्राप्त होती है। इस अवस्था में किसी भी प्रकार का भेद शेष नहीं रहता- **'प्रारब्धकर्मक्षये सति देहपातानन्तरं प्राप्यमाणा मुक्तिः विदेहमुक्तिः इति उच्यते'**।[11]

अन्य वेदान्त दर्शनों से तुलनात्मक अध्ययन

रामानुज के विशिष्टाद्वैत और माध्व के द्वैत दर्शन में मोक्ष की अवधारणा अद्वैत से भिन्न है। विशिष्टाद्वैत में मोक्ष ईश्वर-सायुज्य है- 'निरतिशय-दीप्ति-युक्तानां परब्रह्मणा सह एकीभावः सायुज्यम्'[12], जबकि द्वैत में जीव और ईश्वर का भेद बना रहता है-

'जीवेश्वरभिदा चैव जडेश्वरभिदा तथा।

जीवभेदो मिथश्चैव जडजीवभिदा तथा।।

मिथश्च जडभेदोऽयं प्रपञ्चो भेदपञ्चकः।।'[13]

आधुनिक युग में अद्वैत वेदान्तीय मोक्ष की प्रासंगिकता-

आज के भौतिकतावादी युग में अद्वैत वेदान्त का मोक्ष-सिद्धान्त आत्मिक शान्ति और मानसिक संतुलन का मार्ग प्रस्तुत करता है। स्वामी विवेकानन्द, डॉ० राधाकृष्णन, दासगुप्त आदि विद्वानों ने इसे विश्व-दर्शन के रूप में स्वीकार किया है। वेदान्त दर्शन ही है जो वर्तमान की भागमभाग भरे और तनावपूर्ण संसार में शान्ति प्रदान करता है, भौतिकता से परे जाकर आन्तरिक स्वतन्त्रता प्रदान करता है तथा सभी के साथ एकता की भावना विकसित करता है जो मानव जीवन को एक उद्देश्य देता है। वेदान्त दर्शन से ही समस्त दुःखों के मूल अज्ञान (माया) से मुक्ति मिलती है, जिससे व्यक्तिगत और सामाजिक समस्याओं यथा वर्ग-संघर्ष और धार्मिक कट्टरता का समाधान मिलता है।

उपसंहार

अद्वैत वेदान्त में मोक्ष आत्मा की स्वाभाविक अवस्था है। यह न कोई नवीन उपलब्धि है और न ही किसी लोक-विशेष की प्राप्ति। अविद्या के नाश से आत्मा अपने वास्तविक ब्रह्मस्वरूप को पहचान लेती है। इसे ही उपनिषदों, दर्शनों, विद्वानों ने मोक्ष कहा है।

संदर्भ-सूची (Reference)-

1. शंकराचार्य, ब्रह्मसूत्र-भाष्य, गीता प्रेस, गोरखपुर।
2. शंकराचार्य, उपनिषद्-भाष्य संग्रह।
3. शंकराचार्य, भगवद्गीता-भाष्य।
4. राधाकृष्णन, सर्वपल्ली, भारतीय दर्शन, खण्ड 2
5. दासगुप्त, सुरेन्द्रनाथ, इंडियन फिलोसफी, खण्ड 1
6. हजारीप्रसाद द्विवेदी, भारतीय दर्शन की भूमिका।

पाद-टिप्पणियाँ (Footnote)-

[1]छान्दोग्य उपनिषद् ६/२/१

[2]न्यायसूत्र १/१/२२

[3]योगसूत्र २/२५

[4]त्रिपिटक, इति-वुत्तक, खुद्दक निकाय, सुत्त ४४

[5]ब्राम्हसूत्र, अनुवाक २/१/१२

[6]ब्राम्हसूत्र, अनुवाक २/१/२६

[7]छान्दोग्य उपनिषद् ६/८/७-९

[8]मुण्डकोपनिषद् ३/२/९

[9]वृहदारण्यक उपनिषद ४/५/६-७

[10]ब्राम्हसूत्र ३/४/१-३

[11]ब्राम्हसूत्र अध्याय ४ (चतुर्थ), भाग २

[12]ब्राम्हसूत्र फलअध्याय (चतुर्थ) ४/३/१०-१४

[13]परमोपनिषद